International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 31-07-2026, Accepted: 30-08-2026, Published: 14-09-2026
Volume 12, Issue 3, 2026, Page No. 164-169

भारतीय एवं वैश्विक मजदूर आंदोलनों के इतिहास में महिला मज़दूरों की भूमिका, दोहरे शोषण का यथार्थ और ऐतिहासिक संघर्ष

ज्योति
शोधार्थी, हिंदी विभाग, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली, भारत

सारांश
प्रस्तुत शोध–पत्र मजदूर आंदोलनों के इतिहास लेखन में महिला श्रमिकों की उपेक्षित किंतु केंद्रीय भूमिका का ऐतिहासिक एवं सामाजिक–आर्थिक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। परंपरावादी इतिहास लेखन में मजदूर संघर्षों को मुख्यतः पुरुष श्रमिकों की परिपरिणामी गतिविधियों के रूप में देखा गया। किंतु वस्तुस्थिति यह है कि महिला श्रमिकों ने न केवल उत्पादन प्रक्रिया की नींव रखी, बल्कि आंदोलनों को संगठित करने, वैचारिक नेतृत्व देने तथा उन्हें लैंगिक व सामाजिक न्याय के व्यापक प्रश्नों से जोड़ने में भी निर्णायक भूमिका निभाई। यह शोध–पत्र महिला मज़दूरों के 'दोहरे शोषण'—पूँजीवादी व्यवस्था द्वारा आर्थिक शोषण तथा पितृसत्तात्मक समाज द्वारा लैंगिक भेदभाव—की अवधारणा की व्याख्या करता है। अध्ययन में भारत के ऐतिहासिक एवं समकालीन आंदोलनों (छत्तीसगढ़ खदान मजदूर आंदोलन, मुन्नार चाय बागान का 'पेम्बिलई ओरुमई', बेंगलुरु गारमेंट वर्कर्स आंदोलन तथा एनसीआर क्षेत्र के गारमेंट आंदोलनों) के साथ–साथ वैश्विक परिप्रेक्ष्य में औद्योगिक क्रांति, शिकागो के हेमार्केट आंदोलन, मई दिवस के इतिहास तथा 1917 की रूसी क्रांति में महिला श्रमिकों के योगदान की पड़ताल की गई है।

मूल शब्दः महिला मजदूर, दोहरा शोषण, पितृसत्ता, श्रम इतिहास, छत्तीसगढ़ मुक्ति मोर्चा, पेम्बिलई ओरुमई, हेमार्केट आंदोलन, मई दिवस, मार्क्सवाद

भारतीय एवं वैश्विक मजदूर आंदोलनों के इतिहास में महिला मज़दूरों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण और परिवर्तनकारी रही है। औद्योगिक क्रांति के बाद जब पूँजीवादी उत्पादन प्रणाली का विस्तार हुआ, तब इस मजदूर वर्ग में महिलाओं की भागीदारी अनिवार्य और व्यापक रूप से उभरी। किंतु, लंबे समय तक इतिहास लेखन में मजदूर आंदोलनों को मुख्यतः पुरुष श्रमिकों के संघर्ष के रूप में प्रस्तुत किया गया, जबकि वास्तविकता यह है कि महिला मज़दूरों ने न केवल उत्पादन प्रक्रिया में महत्वपूर्ण योगदान दिया बल्कि श्रमिक आंदोलनों को संगठित करने, नेतृत्व देने और उन्हें व्यापक सामाजिक–आर्थिक न्याय के प्रश्नों से जोड़ने में भी निर्णायक भूमिका निभाई।

महिला मज़दूरों ने हमेशा दोहरे शोषण का सामना किया है—एक ओर पूँजीवादी व्यवस्था द्वारा आर्थिक शोषण और दूसरी ओर पितृसत्तात्मक समाज द्वारा लैंगिक भेदभाव। इसके बावजूद उन्होंने खेतों, कारखानों, खदानों, चाय बागानों, वस्त्र उद्योगों और असंगठित क्षेत्रों में अपने अधिकारों के लिए लगातार संघर्ष किया। छत्तीसगढ़ के खदान मजदूर आंदोलन, मुन्नार चाय बागान आंदोलन, बेंगलुरु गारमेंट वर्कर्स आंदोलन तथा हाल के दिल्ली एनसीआर क्षेत्र के गारमेंट श्रमिक आंदोलनों में महिला मजदूरों की भूमिका विशेष रूप से उल्लेखनीय रही है। इन आंदोलनों ने श्रम अधिकारों के साथ–साथ महिला सम्मान, समान मजदूरी, सामाजिक सुरक्षा और श्रमिक लोकतंत्र के प्रश्नों को भी केंद्र में रखा।

महिला मज़दूर और भारतीय श्रमिक आंदोलन: ऐतिहासिक संदर्भ एवं समस्याएँ

भारत में औद्योगीकरण के विस्तार के साथ बड़ी संख्या में महिलाएँ मजदूरी कार्य में शामिल हुईं। औपनिवेशिक काल से ही कपड़ा मिलों, जूट उद्योग, खदानों, बीड़ी उद्योग, घरेलू श्रम, कृषि कार्य और चाय बागानों में महिलाओं की मेहनत भारतीय अर्थव्यवस्था का महत्वपूर्ण हिस्सा रही। लेकिन महिलाओं को पुरुषों की तुलना में कम मजदूरी दी जाती थी और उन्हें असुरक्षित वातावरण में काम करना पड़ता था।

1. महिला मज़दूरों के समक्ष प्रमुख समस्याएँ

महिला श्रमिकों का जीवन बहुआयामी समस्याओं से घिरा रहा है। इन समस्याओं ने उन्हें संगठित होने और संघर्ष करने के लिए बाध्य किया:

1. **कम मजदूरी (Wage Discrimination):** समान समय और कठोर श्रम के बावजूद महिलाओं को सदैव पुरुषों से कम वेतन दिया गया।

2. **लंबे कार्य घंटे (Exhaustive Work Hours):** कारखानों और खेतों में 12 से 16 घंटे का अमानवीय श्रम–दिवस।

3. **मातृत्व सुविधाओं का अभाव (Absence of Maternity Benefits):** गर्भावस्था और प्रसव के दौरान सुरक्षा, अवकाश या भत्ते की कोई व्यवस्था न होना।

4. **यौन उत्पीड़न (Sexual Harassment):** कार्यस्थल पर ठेकेदारों, प्रबंधकों और उच्चाधिकारियों द्वारा लगातार लैंगिक एवं मानसिक शोषण।

5. **सामाजिक असुरक्षा (Social Insecurity):** वृद्धवस्था, बीमारी या दुर्घटना की स्थिति में किसी भी प्रकार की पेंशन या बीमा का न होना।

6. **ट्रेड यूनियनों में सीमित प्रतिनिधित्व (Limited Representation in Trade Unions):** परंपरागत ट्रेड यूनियनों का पुरुष–प्रधान ढाँचा, जो महिलाओं की विशिष्ट माँगों की उपेक्षा करता था।

इन्हीं कठिन परिस्थितियों ने महिला मज़दूरों को चेतनाबद्ध किया और उन्हें आंदोलनों तथा संगठनों की ओर प्रेरित किया।

भारतीय श्रमिक आंदोलनों में महिला नेतृत्व: प्रमुख केस स्टडीज

1. छत्तीसगढ़ खदान मजदूर आंदोलन और महिला श्रमिक

छत्तीसगढ़ के खदान मजदूर आंदोलनों में महिला श्रमिकों की भूमिका ऐतिहासिक रही है। विशेष रूप से दल्ली–राजहरा खदान क्षेत्र में हुए मजदूर आंदोलन ने पूरे देश का ध्यान आकर्षित किया। इस आंदोलन का नेतृत्व शंकर गुहा नियोगी और 'छत्तीसगढ़ मुक्ति मोर्चा' (CGMM) ने किया, लेकिन इसकी सबसे बड़ी ताकत महिला मजदूर थीं। दल्ली–राजहरा की लौह अयस्क खदानों में काम करने वाली महिलाएँ अत्यंत कठिन परिस्थितियों में श्रम करती थीं। उन्हें कम मजदूरी मिलती थी और कार्यस्थल पर सुरक्षा के पर्याप्त साधन उपलब्ध नहीं थे। खदानों में दुर्घटनाएँ सामान्य थीं और श्रमिकों के स्वास्थ्य की कोई व्यवस्था नहीं थी। महिला श्रमिकों ने केवल मजदूरी की लड़ाई नहीं लड़ी बल्कि उन्होंने आंदोलन को सामाजिक–आर्थिक परिवर्तन के आंदोलन में बदल दिया। वे—

- धरनों और रैलियों में अग्रणी पंक्ति में शामिल हुईं,
- राज्य व पुलिस दमन का निर्भीकता से सामना किया,
- श्रमिक परिवारों को संगठित कर मोहल्ला कमेटियाँ बनाईं,
- शराबबंदी आंदोलनों में बढ़कर भाग लिया, तथा
- श्रमिक शिक्षा अभियानों और सांस्कृतिक चेतना को आगे बढ़ाया।

छत्तीसगढ़ आंदोलन की एक बड़ी विशेषता यह थी कि महिला श्रमिकों ने मजदूर आंदोलन को केवल औद्योगिक विवाद न मानकर सामाजिक जीवन से जोड़ा। उन्होंने यह बुनियादी सवाल उठाया कि यदि मजदूर परिवारों की महिलाएँ असुरक्षित और शोषित रहेंगी तो श्रमिक आंदोलन अधूरा रहेगा।
महिलाओं ने श्रमिक अस्पताल, शिक्षा और स्वास्थ्य अभियानों में भी सक्रिय भूमिका निभाई। छत्तीसगढ़ मुक्ति मोर्चा द्वारा स्थापित ऐतिहासिक "शहीद अस्पताल" जैसे जन–कल्याणकारी प्रयासों में महिला श्रमिकों की निर्माण से लेकर संचालन तक में भागीदारी महत्वपूर्ण थी। छत्तीसगढ़ के आंदोलन ने यह सिद्ध किया कि महिला मजदूर केवल सहायक भूमिका में नहीं बल्कि नेतृत्वकारी भूमिका में भी हो सकती हैं (Sen, 1990)।

2. मुन्नार चाय बागान मजदूर आंदोलन (पेम्बिलई ओरुमई)

केरल के मुन्नार चाय बागान मजदूर आंदोलन में महिला श्रमिकों की भूमिका ने भारतीय ट्रेड यूनियन राजनीति को एक नई दिशा दी। मुन्नार के चाय बागानों में बड़ी संख्या में महिलाएँ कार्यरत थीं। वे अत्यधिक शारीरिक मेहनत के बावजूद बेहद कम मजदूरी पर काम करती थीं।
वर्ष 2015 में मुन्नार की महिला श्रमिकों ने "पेम्बिलई ओरुमई" (महिला एकता) नामक संगठन बनाकर एक ऐतिहासिक आंदोलन शुरू किया। इस आंदोलन की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि इसे महिलाओं ने स्वयं संगठित किया और यह पारंपरिक, पुरुष–प्रधान ट्रेड यूनियनों से पूरी तरह स्वतंत्र था।

महिला श्रमिकों की मुख्य माँगें:

- बोनस में न्यायसंगत वृद्धि,
- बेहतर और सम्मानजनक मजदूरी,
- कार्यस्थल पर मानवीय व्यवहार और सम्मान,
- बुनियादी श्रमिक सुविधाएँ (आवास, शौचालय, चिकित्सा),
- ट्रेड यूनियनों में वास्तविक और निर्णयकारी प्रतिनिधित्व।

इन महिलाओं ने लंबे समय तक सड़कों पर अभूतपूर्व धरना दिया। हजारों महिला श्रमिकों ने चाय बागानों का काम पूरी तरह रोक दिया, जिससे चाय उत्पादन ठप हो गया। आंदोलन की सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि महिलाओं ने स्थापित पुरुष–प्रधान यूनियन नेतृत्व को चुनौती दी। मुन्नार आंदोलन ने यह स्पष्ट किया कि कई बार पारंपरिक ट्रेड यूनियनें महिला श्रमिकों की वास्तविक और लैंगिक समस्याओं को नज़रअंदाज़ करती हैं। इसलिए महिलाओं ने स्वयं नेतृत्व अपने हाथ में लिया। इस आंदोलन के परिणामस्वरूप मजदूरी और बोनस में सुधार हुआ तथा महिला श्रमिकों की राजनीतिक व सांगठनिक शक्ति को व्यापक पहचान मिली।

3. बेंगलुरु गारमेंट वर्कर्स आंदोलन

बेंगलुरु भारत का एक प्रमुख गारमेंट (वस्त्र) उद्योग केंद्र है, जहाँ लाखों महिला श्रमिक काम करती हैं। ये महिलाएँ मुख्यतः ग्रामीण पृष्ठभूमि, दलित, बहुजन और निम्न आय वर्ग से आती हैं।
गारमेंट उद्योग में महिला श्रमिकों को अत्यधिक दबाव में काम करना पड़ता है:

- अमानवीय लंबे कार्य घंटे,
- न्यूनतम जीवन–निर्वाह से भी कम वेतन,
- असंभव उत्पादन लक्ष्यों (Production Targets) का मानसिक दबाव,
- कार्यस्थल पर मौखिक और यौन उत्पीड़न,
- नौकरी की भयानक अस्थिरता और ठेका प्रथा।

वर्ष 2016 में बेंगलुरु में महिला गारमेंट श्रमिकों ने भविष्य निधि (PF) संबंधी केंद्र सरकार की मजदूर–विरोधी नीतियों के खिलाफ एक विशाल आंदोलन खड़ा किया। बिना किसी बड़े औपचारिक यूनियन चेहरे के, हजारों महिला श्रमिक सड़कों पर उतर आईं और पूरे शहर में प्रदर्शन हुए।

इस आंदोलन की खास बात यह थी कि इसे मुख्यतः महिला श्रमिकों ने स्वतःस्फूर्त (Spontaneous) रूप से संगठित किया। सोशल मीडिया, आपसी नेटवर्क और फैक्ट्री स्तर के संपर्कों के माध्यम से महिलाओं ने अभूतपूर्व लामबंदी की। महिला श्रमिकों ने स्पष्ट कहा कि उनके अनवरत श्रम से गारमेंट उद्योग को भारी मुनाफा होता है, लेकिन उन्हें उनके बुनियादी सामाजिक–सुरक्षा अधिकार भी नहीं दिए जा रहे हैं।

इस आंदोलन द्वारा उठाए गए मुख्य प्रश्न:

1. श्रमिक सुरक्षा एवं गरिमा का प्रश्न,
2. सामाजिक सुरक्षा योजनाओं पर श्रमिक का अधिकार,
3. महिला श्रमिकों का आर्थिक स्वावलंबन,
4. असंगठित व ठेका श्रम का संस्थागत शोषण।

इस व्यापक और उग्र महिला विरोध के आगे झुकते हुए फासीवादी सरकार को अंततः अपने निर्णय को वापस लेना पड़ा। इससे यह सिद्ध हुआ कि संगठित महिला श्रमिक आंदोलन नीतिगत बदलाव लाने की क्षमता रखता है।

4. एनसीआर क्षेत्र में हाल के गारमेंट श्रमिक आंदोलन

दिल्ली–एनसीआर क्षेत्र—विशेषकर नोएडा, गुरुग्राम, फरीदाबाद और गाज़ियाबाद—में बड़ी संख्या में महिला श्रमिक गारमेंट फैक्ट्रियों में काम करती हैं। ये महिलाएँ अक्सर प्रवासी (Migrant) पृष्ठभूमि से आती हैं और बेहद कम वेतन पर असुरक्षित परिस्थितियों में काम करती हैं।

हाल के वर्षों में एनसीआर क्षेत्र में महिला गारमेंट श्रमिकों ने कई प्रमुख मुद्दों पर आंदोलन किए हैं:

- न्यूनतम मजदूरी को लागू करने की माँग,
- बकाया वेतन का तत्काल भुगतान,
- ओवरटाइम का उचित भुगतान,
- कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न के खिलाफ कड़े कदम,
- कोविड–19 महामारी के दौरान नौकरी की सुरक्षा।

कोविड–19 महामारी के समय जब लॉकडाउन लगा, तब बड़ी संख्या में महिला श्रमिकों को बिना वेतन, बिना अग्रिम सूचना और बिना किसी मुआवज़े के काम से निकाल दिया गया। इसके खिलाफ महिलाओं ने सड़कों पर प्रदर्शन, विरोध अभियान और कानूनी लड़ाइयाँ चलाईं।

दिल्ली एनसीआर के गारमेंट उद्योग में महिलाओं को अक्सर यूनियन बनाने से रोका जाता है और दमन किया जाता है। इसके बावजूद महिला श्रमिकों ने छोटे–छोटे समूहों, फैक्ट्री कमेटियों और स्वतंत्र श्रमिक संगठनों के माध्यम से अपनी आवाज़ उठाई। उन्होंने सीधे सवाल पूछे:

- फैक्ट्रियों में सुरक्षित और गरिमापूर्ण कार्यस्थल क्यों नहीं हैं?
- समान काम के लिए पुरुषों के समान वेतन क्यों नहीं मिलता?
- श्रम कानूनों का सरेआम उल्लंघन क्यों होता है?

इन संघर्षों ने आधुनिक पूँजीवादी एवं वैश्वीकृत उद्योगों में महिला श्रमिकों की वास्तविक और दयनीय स्थिति को उजागर किया।

महिला मज़दूर आंदोलन की मौलिक विशेषताएँ

भारतीय एवं वैश्विक संदर्भों का विश्लेषण करने पर महिला मजदूर आंदोलनों की निम्नलिखित विशिष्ट विशेषताएँ रेखांकित होती हैं:

1. **आर्थिक और सामाजिक संघर्ष का मेल:** महिलाओं ने केवल मजदूरी या आर्थिक मांगों की नहीं, बल्कि समाज में सम्मान, कार्यस्थल पर सुरक्षा और लैंगिक समानता की भी लड़ाई लड़ी।

2. **दोहरे शोषण के खिलाफ संघर्ष:** महिला श्रमिकों ने अपनी वर्गीय स्थिति (Capitalist Exploitation) और अपनी लैंगिक स्थिति (Patriarchal Oppression) दोनों के विरुद्ध एक साथ प्रतिरोध दर्ज किया।

3. **सामूहिक नेतृत्व की परंपरा:** किसी एक व्यक्ति–केंद्रित नेतृत्व के बजाय महिला आंदोलनों में सामूहिक निर्णय लेने और लोकतांत्रिक नेतृत्व की परंपरा मजबूत रही है।

4. **असंगठित क्षेत्र की व्यापक भागीदारी:** महिला श्रमिक बड़ी संख्या में असंगठित क्षेत्रों (कृषि, खदान, बीड़ी, चाय बागान, घरेलू काम) में कार्यरत हैं, इसीलिए उनके आंदोलन पारंपरिक नौकरशाह यूनियन ढाँचों से अलग और अधिक जीवंत रहे हैं।

5. **व्यापक सामाजिक परिवर्तन की चेतना:** महिला मजदूर आंदोलनों ने केवल कारखाने तक खुद को सीमित नहीं रखा, बल्कि शिक्षा, जन–स्वास्थ्य, शराबबंदी, घरेलू हिंसा के उन्मूलन और सामाजिक न्याय के प्रश्नों को श्रमिक आंदोलन का अनिवार्य हिस्सा बनाया।

वैश्विक परिप्रेक्ष्य: मई दिवस का इतिहास, अंतरराष्ट्रीय मजदूर आंदोलन और महिलाएँ

औद्योगिक क्रांति के बाद जब पूँजीवादी उत्पादन प्रणाली का विस्तार हुआ, तब इस मजदूर वर्ग में महिलाओं की भागीदारी अत्यंत महत्वपूर्ण रही, किंतु इतिहास लेखन में लंबे समय तक उनकी भूमिका को हाशिये पर रखा गया। महिला श्रमिकों ने केवल उत्पादन प्रक्रिया में योगदान नहीं दिया, बल्कि मजदूर आंदोलनों, ट्रेड यूनियन संघर्षों और सामाजिक परिवर्तन की लड़ाइयों में भी सक्रिय भूमिका निभाई।

"मई दिवस का इतिहास" और वैश्विक श्रमिक आंदोलनों के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि मजदूर वर्ग की एकता और अधिकारों की लड़ाई में महिलाओं की भागीदारी निर्णायक थी। आठ घंटे कार्यदिवस की माँग, बेहतर मजदूरी, कार्यस्थल की सुरक्षा और सामाजिक सम्मान जैसे मुद्दों पर महिला श्रमिकों ने पुरुष श्रमिकों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर संघर्ष किया।

1. औद्योगिक क्रांति और महिला श्रमिक

औद्योगिकीकरण ने उत्पादन प्रणाली में व्यापक परिवर्तन किए। मशीनों के उपयोग और कारखानों की स्थापना ने श्रम के नए रूपों को जन्म दिया। इस प्रक्रिया में महिलाओं और बच्चों को बड़ी संख्या में कारखानों में नियुक्त किया गया क्योंकि उन्हें पुरुषों की तुलना में अत्यंत कम मजदूरी पर काम पर रखा जा सकता था।

महिला श्रमिक मुख्यतः कपड़ा उद्योग, सिलाई उद्योग, खाद्य प्रसंस्करण, घरेलू उत्पादन और सेवा क्षेत्रों में कार्यरत थीं। उन्हें पुरुषों की तुलना में बेहद कम मजदूरी दी जाती थी और कार्य–स्थितियाँ अत्यंत अमानवीय थीं। कारखानों में रोजाना 14 से 18 घंटे तक काम कराना एक सामान्य बात होने लगी थी।

प्रारंभिक मजदूर आंदोलनों की सबसे महत्वपूर्ण माँग कार्य–घंटों को कम करना था। मजदूरों ने "सूर्योदय से सूर्यास्त" तक चलने वाले अमानवीय श्रम–दिवस का विरोध किया। महिला श्रमिकों पर इसका प्रभाव और अधिक गंभीर था क्योंकि उन्हें कारखाने के कठोर श्रम के बाद घर और परिवार की जिम्मेदारियाँ (Unpaid Care Work) भी निभानी पड़ती थीं।

इस प्रकार महिला श्रमिकों का शोषण दो दोहरा स्तरों पर हो रहा था:

महिला श्रमिक शोषण = पूँजीवादी आर्थिक शोषण + पितृसत्तात्मक सामाजिक शोषण

यही दोहरा शोषण महिला श्रमिक आंदोलन की वैचारिक एवं क्रांतिकारी पृष्ठभूमि बना (Engels, 1884)।

2. आठ घंटे कार्यदिवस आंदोलन और महिलाओं की भूमिका

उन्नीसवीं शताब्दी में वैश्विक मजदूर वर्ग ने एक एतिहासिक नारा दिया:

"आठ घंटे काम, आठ घंटे आराम और आठ घंटे मनोरंजन।"

यह नारा केवल कार्य–घंटों की कटौती का मुद्दा नहीं था, बल्कि यह श्रमिकों के मानवीय अधिकारों और गरिमा की माँग का प्रतीक बन गया।

अमेरिका, यूरोप और ऑस्ट्रेलिया में मजदूर आंदोलनों का तेजी से विस्तार हुआ। 1884 में अमेरिका के मजदूर संगठनों (Federation of Organized Trades and Labor Unions) ने घोषणा की कि 1 मई 1886 से आठ घंटे का कार्यदिवस कानूनी रूप से लागू कराया जाएगा। इस आंदोलन में महिला श्रमिकों की विशाल भागीदारी थी।

महिला श्रमिक संघर्ष के मैदान में उतरीं:

- उन्होंने विशाल जुलूसों और रैलियों में शिरकत की,
- आम सभाओं का आयोजन और संचालन किया,
- हड़तालों में भाग लेकर कारखानों के चक्के जाम किए,
- मजदूर परिवारों को संगठित कर उन्हें हड़ताल के दौरान एकजुट रखा,
- मजदूर वर्ग में राजनीतिक व सामाजिक चेतना के प्रसार में योगदान दिया।

महिला श्रमिकों ने यह बात दुनिया के सामने स्पष्ट की कि कार्य–घंटों को घटाने की लड़ाई केवल आर्थिक प्रश्न नहीं, बल्कि मानवीय गरिमा और जीवन की गुणवत्ता का प्रश्न है।

3. शिकागो हेमार्केट आंदोलन (1886) और महिला श्रमिक

मई 1886 का शिकागो हेमार्केट आंदोलन वि व मजदूर इतिहास की सबसे क्रांतिकारी घटना है। मई दिवस की देशव्यापी हड़तालों के दौरान शिकागो शहर मजदूर संघर्ष का मुख्य केंद्र बन गया। हजारों मजदूर आठ घंटे कार्यदिवस की माँग को लेकर सड़कों पर उतर आए।

3 मई और 4 मई 1886 को हेमार्केट स्क्वायर में हुई सभा पर पुलिस ने हिंसक दमन किया, बम विस्फोट के बाद पुलिस गोलीबारी में अनेक मजदूर शहीद हुए और कई मजदूर नेताओं (जैसे ऑगस्ट स्पाइस, अल्बर्ट पार्सन्स आदि) को झूठे मुकदमों में फाँसी दे दी गई। इस आंदोलन में महिला श्रमिकों और महिला कार्यकर्ताओं (जैसे लूसी पार्सन्स – स्नबल च्तेवदे) की अत्यंत सक्रिय और ऐतिहासिक भूमिका थी।

महिला श्रमिकों नेरू

- उग्र मजदूर सभाओं का आयोजन किया,
- पुलिस दमन में घायल हुए मजदूरों की चिकित्सा और देखभाल की,
- राज्य (State) के दमनकारी रवैये के खिलाफ अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आवाज उठाई,
- शहीद मजदूरों के परिवारों को संगठित और आर्थिक रूप से संबल प्रदान किया।

महिला कार्यकर्ताओं ने मजदूर आंदोलन को केवल वेतन–भत्ते के आर्थिक संघर्ष तक सीमित न रखकर उसे वर्ग–मुक्ति, सामाजिक न्याय और मौलिक मानवाधिकारों की व्यापक लड़ाई से जोड़ दिया (Parsons, 1989)।

4. महिला श्रमिक और ट्रेड यूनियन आंदोलन

समय के साथ ट्रेड यूनियन आंदोलनों में महिलाओं की भागीदारी धीरे–धीरे बढ़ने लगी। प्रारंभिक दौर में अधिकांश स्थापित ट्रेड यूनियनें पुरुष–प्रधान थीं और वे महिलाओं को संगठित करने या उनकी समस्याओं को उठाने में विशेष रुचि नहीं लेती थीं। लेकिन महिला श्रमिकों ने अपने जीवंत अनुभवों के आधार पर स्वतंत्र महिला श्रमिक संगठन बनाए और कालांतर में मुख्यधारा की यूनियन राजनीति में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।

महिला श्रमिकों ने ट्रेड यूनियन एजेंडे में निम्नलिखित मुद्दों को शामिल करने के लिए मजबूर कियारू

- समान काम के लिए समान वेतन (Equal Pay for Equal Work),
- कार्यस्थल पर शारीरिक व मानसिक सुरक्षा,
- मातृत्व अधिकार और सवेतन मातृत्व अवकाश (Maternity Benefits),
- यौन उत्पीड़न का विरोध और निवारण समितियाँ,
- स्वास्थ्य सुविधाएँ और क्रैच (Crèche) की व्यवस्था,
- कार्य–घंटों में कमी और सुरक्षित परिवहन।

महिला नेतृत्व के आगमन ने ट्रेड यूनियन आंदोलन को एक व्यापक जन–आधार प्रदान किया। इससे मजदूर आंदोलन केवल औद्योगिक कारखानों तक सीमित न रहकर समाज के अन्य शोषित व हाशिये के वर्गों तक पहुँच सका।

5. वर्ग संघर्ष और महिला प्रश्न: मार्क्सवादी परिप्रेक्ष्य

मार्क्सवादी विचारधारा ने महिला श्रमिक प्रश्न को सीधे वर्ग संघर्ष और पूँजीवादी उत्पादन संबंधों से जोड़कर देखा। कार्ल मार्क्स और फ्रेडरिक एंगेल्स ने पूँजीवादी व्यवस्था में श्रम के शोषण का विश्लेषण करते हुए महिला श्रमिकों की स्थिति को अत्यंत महत्वपूर्ण माना।

फ्रेडरिक एंगेल्स ने अपनी कालजयी कृति 'द ओरिजिन ऑफ द फैमिली, प्राइवेट प्रॉपर्टी एंड द स्टेट' (1884) में यह स्थापित किया कि "महिलाओं की सामाजिक अधीनता और दासता का मूल कारण निजी संपत्ति का उदय और आर्थिक संरचना है। पूँजीवाद घरेलू श्रम (Unpaid Domestic Work) का निःशुल्क लाभ उठाकर मजदूर वर्ग का पुनरुत्पादन करता है।"

महिला श्रमिक आंदोलन ने मार्क्सवादी वैचारिकी को समृद्ध करते हुए यह स्पष्ट किया कि:

1. महिलाओं की वास्तविक मुक्ति बिना वर्गीय मुक्ति (Abolition of Capitalism) के संभव नहीं है,
2. और वर्गीय मुक्ति बिना महिला श्रमिकों की मुक्ति और पूर्ण समानता के अधूरी और असंभव है।

इस सिद्धांत ने महिला श्रमिक आंदोलनों को केवल एक लैंगिक सुधारवादी आंदोलन बनने से रोका और उसे पूँजीवाद विरोधी व्यापक वर्ग संघर्ष का रूप दिया (Luxemburg, 1911)।

6. अंतरराष्ट्रीय मजदूर आंदोलन और महिलाएँ

1889 में पेरिस में आयोजित 'सेकंड इंटरनेशनल' (Second International) के सम्मेलन में 1 मई को प्रतिवर्ष 'अंतरराष्ट्रीय मजदूर दिवस' के रूप में मनाने का ऐतिहासिक निर्णय लिया गया। इसके बाद पूरे वि व में 1 मई को मजदूर अधिकारों के संकल्प दिवस के रूप में मनाया जाने लगा।

अंतरराष्ट्रीय मजदूर आंदोलनों में क्लारा जेटकिन (Clara Zetkin), रोजा लक्जमबर्ग (Rosa Luxemburg) और एलेक्जेंड्रा कोलोंताई (Alexandra Kollontai) जैसी महिला विचारकों और श्रमिकों ने ऐतिहासिक योगदान दिया। क्लारा जेटकिन के प्रयासों से ही 1910 में अंतरराष्ट्रीय कामकाजी महिला दिवस (International Working Women's Day) की शुरुआत हुई।

महिला श्रमिकों ने अंतरराष्ट्रीय मंचों पर:

- वैश्विक मजदूर एकता को सुदृढ़ किया,
- अंतरराष्ट्रीय स्तर पर श्रम चेतना का विस्तार किया,
- पूँजीवादी युद्धों के खिलाफ 'शांति, समानता और सामाजिक न्याय' की माँग उठाई।

महिलाओं की सक्रिय भागीदारी से मजदूर आंदोलन केवल आर्थिक माँगों का मंच न रहकर संपूर्ण मानवीय संस्कृति और सामाजिक परिवर्तन का आंदोलन बन गया।

7. रूसी क्रांति (1917) और महिला श्रमिक

20वीं शताब्दी की सबसे बड़ी घटना—1917 की रूसी क्रांतिकृमें महिला श्रमिकों की भूमिका अत्यंत निर्णायक और प्रारंभिक बिंदु थी।

8 मार्च 1917 (रूसी कैलेंडर के अनुसार 23 फरवरी) को पेट्रोग्राद की महिला कपड़ा कपड़ा श्रमिकों ने रोटी और कपड़ा की भारी कमी के खिलाफ स्वतः स्फूर्त हड़ताल शुरू कर दी। महिलाओं ने "रोटी और शांति" (Bread and Peace) के नारों के साथ सड़कों पर मार्च किया। इस महिला हड़ताल ने ही जारशाही के खिलाफ 'फरवरी क्रांति' का बिगुल बजाया, जिसने अंततः निरंकुश जार के शासन का तख्तापलट कर दिया।

रूसी महिला श्रमिकों ने:

- निरंकुश जारशाही और निरंकुश पूँजीवाद के खिलाफ सीधी लड़ाई लड़ी,
- प्रथम विश्वयुद्ध के खिलाफ व्यापक युद्ध–विरोधी (Anti–War) आंदोलन चलाया,
- बोल्शेविक पार्टी के नेतृत्व में समाजवादी क्रांति को मजबूत जनाधार प्रदान किया।

क्रांति के पश्चात लेनिन और बोल्शेविक सरकार ने महिला प्रश्न को समाजवादी निर्माण के केंद्र में रखा। क्रांति के तुरंत बाद महिलाओं को अभूतपूर्व अधिकार प्राप्त हुए:

- समान काम के लिए पूर्ण समान वेतन,
- वैधानिक सवेतन मातृत्व अवकाश और मुफ़्त बाल–देखभाल केंद्र (Crèches),
- शिक्षा और वोकेशनल ट्रेनिंग का समान अधिकार,
- मताधिकार और राजनीतिक निर्णयन में पूर्ण भागीदारी।

यह ऐतिहासिक साक्ष्य यह प्रमाणित करता है कि महिला श्रमिक संघर्ष समाजवादी और जनवादी आंदोलनों के केंद्र में स्थित था (Kollontai, 1977)।

8. भारत में महिला श्रमिक आंदोलन का ऐतिहासिक विकास

भारत में औपनिवेशिक शासन के दौरान जब आधुनिक उद्योगों (कपड़ा मिलों, जूट मिलों, चाय बागानों और रेलवे) की स्थापना हुई, तब महिला श्रमिकों की संख्या में भारी वृद्धि हुई।

भारतीय महिला श्रमिकों की स्थिति अत्यंत दयनीय थीरू

- पुरुषों से आधा या एक–तिहाई वेतन,
- 14 से 16 घंटे का अमानवीय कार्यदिवस,
- जातिगत भेदभाव और सामाजिक छुआछूत का दंश,
- कार्यस्थल पर ठेकेदारों द्वारा निरंतर यौन शोषण,
- चिकित्सा, स्वास्थ्य और सुरक्षा सुविधाओं का पूर्ण अभाव।

बीसवीं शताब्दी के आरंभ में भारतीय मजदूर आंदोलनों में महिलाओं की सहभागिता तेजी से बढ़ी। भारत के स्वतंत्रता संग्राम और वामपंथी (Leftist) आंदोलनों ने महिला श्रमिक चेतना को उभारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

महिला श्रमिकों ने:

- मुंबई, अहमदाबाद और कोलकाता की कपड़ा मिल हड़तालों (1920–1940 के दशक) में बढ़–चढ़कर भाग लिया,
- असम और बंगाल के चाय बागान आंदोलनों में पुलिस व बागान मालिकों के अत्याचारों का सामना किया,
- तेलंगाना किसान सशस्त्र संघर्ष और तेभागा आंदोलन में खेत मजदूर के रूप में अग्रणी भूमिका निभाई,
- ट्रेड यूनियनों आदि में शामिल होकर अपनी माँगों को राष्ट्रीय पटल पर रखा।

महिला श्रमिक आंदोलन और सामाजिक न्याय का सिद्धांत

महिला श्रमिक आंदोलन केवल मजदूरी बढ़ाने या कार्य–घंटे घटाने की संकीर्ण आर्थिक लड़ाई तक सीमित नहीं रहा। यह मौलिक रूप से सामाजिक न्याय, मानवीय गरिमा, समानता और स्वाभिमान का संघर्ष रहा है।

महिला श्रमिकों ने जाति (Castes), वर्ग (Class) और लिंग (Gender) के त्रिस्तरीय शोषण के खिलाफ एक साथ संघर्ष किया। उन्होंने यह बात सैद्धांतिक और व्यावहारिक रूप से स्पष्ट की कि पूँजीवादी व्यवस्था महिलाओं के श्रम का दोहरा शोषण करती हैरू

1. **उत्पादन के क्षेत्र में (Public Sphere):** कारखानों और खेतों में कम मजदूरी देकर सरप्लस वैल्यू (Surplus Value) का निष्कर्षण।

2. **पुनरुत्पादन के क्षेत्र में (Private/Domestic Sphere):** घर के भीतर अवैतनिक घरेलू श्रम (Unpaid Domestic Labor) द्वारा भावी और वर्तमान श्रमिक वर्ग को पुनः कार्य–योग्य बनाए रखना।

इसलिए, महिला मजदूर आंदोलनों ने सामाजिक परिवर्तन की एक व्यापक और समग्र अवधारणा को जन्म दिया, जिसने पारंपरिक श्रमिक आंदोलन की सीमाओं का विस्तार किया।

निष्कर्ष

भारतीय एवं वि व मजदूर आंदोलनों में महिला मजदूरों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण, केंद्रीय और परिवर्तनकारी रही है। छत्तीसगढ़ के ऐतिहासिक खदान मजदूर आंदोलन से लेकर मुन्नार चाय बागान के 'पेम्बिलई ओरुमई' आंदोलन, बेंगलुरु गारमेंट वर्कर्स आंदोलन और दिल्ली–एनसीआर के हालिया गारमेंट श्रमिक संघर्षों तक, महिलाओं ने यह अकाट्य रूप से सिद्ध किया है कि वे केवल मूक श्रमशक्ति (Passive Workforce) नहीं हैं, बल्कि आंदोलन की मुख्य नेतृत्वकारी शक्ति (Leading Force) हैं।

महिला श्रमिकों ने मजदूर आंदोलनों को केवल वेतन–भत्तों तक सीमित न रखकर उसे व्यापक सामाजिक न्याय, मानवाधिकार, गरिमा, स्वास्थ्य, शिक्षा और शराबबंदी जैसे जीवन–संबद्ध प्रश्नों से जोड़ा। उन्होंने यह स्पष्ट कर दिया कि श्रमिक अधिकारों की लड़ाई महिलाओं की मुक्ति और सम्मान की लड़ाई से अलग नहीं की जा सकती।

आज भी 21वीं सदी के वै वीकृत, नव–उदारवादी (Neoliberal) दौर में महिला श्रमिक असंगठित क्षेत्र, अनिश्चित रोजगार (Precarity), निजीकरण, ठेका प्रथा (Contractualization) और भीषण आर्थिक असुरक्षा जैसी गंभीर चुनौतियों का सामना कर रही हैं। इसके बावजूद वे देश–दुनिया के कोने–कोने में संगठित होकर अपने अधिकारों के लिए संघर्षरत हैं।

मई दिवस का इतिहास और भारतीय मजदूर आंदोलनों का संपूर्ण इतिहास यह प्रमाणित करता है कि महिला मजदूरों की सक्रिय भागीदारी और नेतृत्व के बिना कोई भी श्रमिक आंदोलन न तो पूर्ण हो सकता है और ना ही सफल।

संदर्भ–सूची

1. Engels, Friedrich. (1884). The Origin of the Family] Private Property and the State. Zurich. (हिंदी अनुवाद: परिवार, निजी संपत्ति और राज्य की उत्पत्ति, प्रगति प्रकाशन).
2. Kollontai, Alexandra. (1977). Selected Writings of Alexandra Kollontai. Translated by Alix Holt. Allison – Busby.

3. Luxemburg, Rosa. (1911). Women's Suffrage and Class Struggle. Selected Writings.
4. Marx, Karl. (1867). Das Kapital: Critique of Political Economy (Vol. 1). Verlag von Otto Meissner.
5. Niyogi, Shankar Guha. (1992). Chhattisgarh Labour Movement and Alternative Development Scheme. CGMM Publications.
6. Parsons, Lucy. (1989). Freedom, Equality – Solidarity: Writings – Speeches of Lucy Parsons. Charles H. Kerr Publishing Company.
7. Sen, Ilina. (1990). A Space within the Struggle: Women's Participation in People's Movements. Kali for Women.
8. Sen, Samita. (1999). Women and Labour in Late Colonial India: The Bengal Jute Industry. Cambridge University Press.
9. Thompson E P. (1963). The Making of the English Working Class. Victor Gollancz Ltd.
10. Zetkin, Clara. (1984). Clara Zetkin: Selected Writings. Edited by Philip S. Foner. International Publishers.